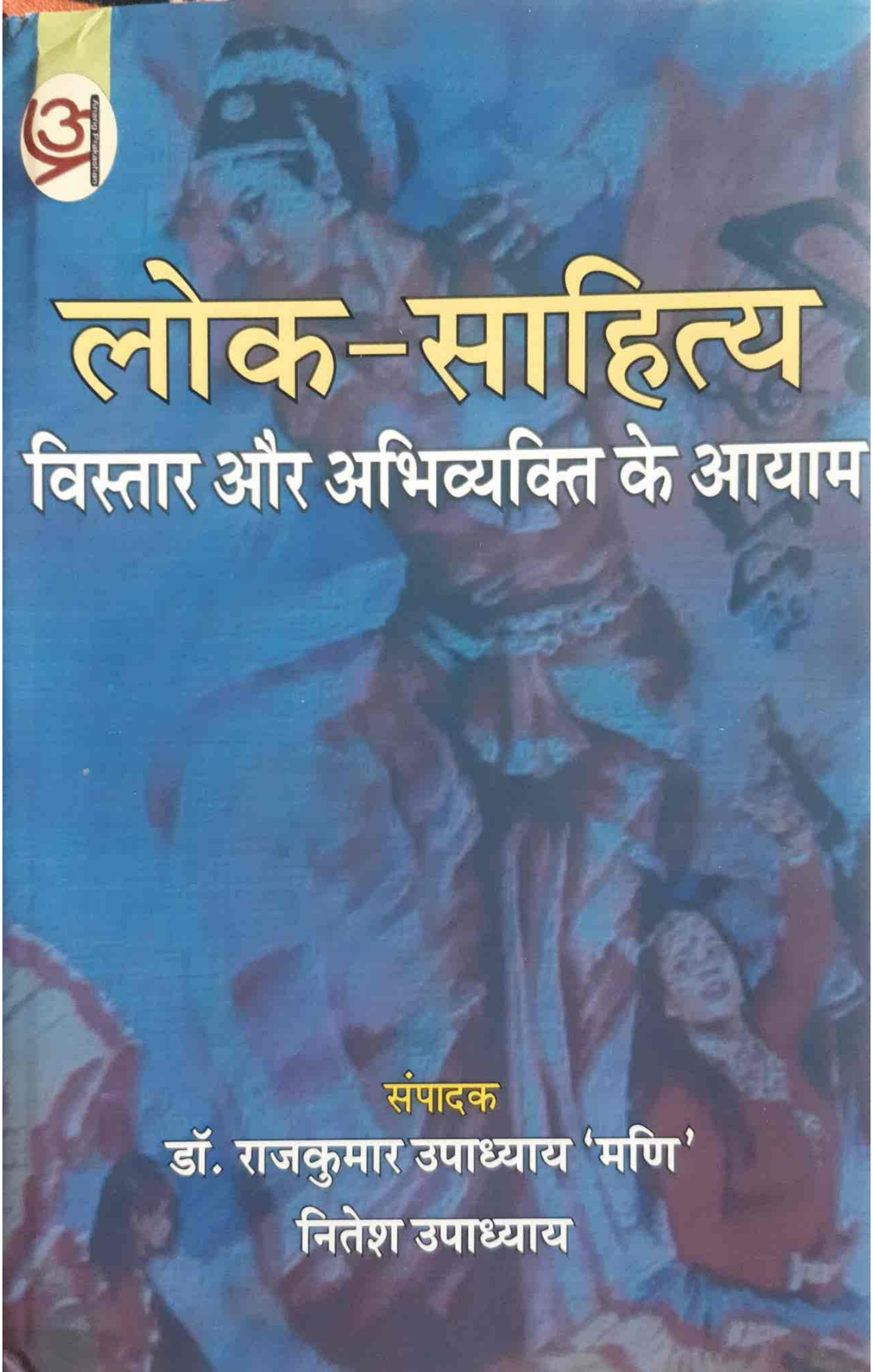

लोक-साहित्य

विस्तार और अभिव्यक्ति के आयाम

संपादक
डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'
नितेश उपाध्याय

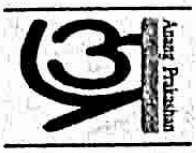

ISBN : 978-81-948246-2-6

© : संपादक

मुख्य वितरक
स्याही ब्लू बुक्स, दिल्ली
syahiblue.books@gmail.com

शाखा
अनंग प्रकाशन / ठा. गजराज सिंह, भगतपुर,
पोस्ट – भगतपुर, जिला– अलीगढ़ 203132 (उ.प्र.) भारत

अनंग प्रकाशन

फोन नं. 9350563707, 9540176542

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : 995 रुपए

ई–मेल : anangprakashan@gmail.com
anangbooks@gmail.com

अनंग प्रकाशन, बी–107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली–110053, शब्द–संयोजन : सिद्ध–भभूति ग्राफिक्स, दिल्ली– 110053, मुद्रक : राजोरिया प्रिन्टर्स, दिल्ली–32 से मुद्रित।

अनुक्रम

भूमिका 10

खण्ड - क

1. लोक साहित्य में समाज की अभिव्यक्ति
— *डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'* 17
2. बुंदेलखंड की कला में लोक जीवन
— *प्रो. महेन्द्र कुमार उपाध्याय* 30
3. नारी जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति : भोजपुरी लोक गीत
— *प्रो. वशिष्ठ अनूप* 34
4. पूर्वोत्तर क्षेत्र के संदर्भ में लोक साहित्य : एक अनुशीलन
— *प्रो.दिनेश कुमार चौबे* 46
5. लोक साहित्य की अवधारणा और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ
— *प्रो. जंग बहादुर पाण्डेय* 54
6. लोक की अवधारणा एवं लोक साहित्य का स्वरूप : एक विवेचन
— *डॉ. प्रीति सिंह* 59
7. मार्कण्डेय की कहानियों में लोक संस्कृति की झलक
— *डॉ. सुजीत कुमार सिंह* 70
8. कला, ज्ञान और शिल्प का अक्षय भण्डार : लोकनाट्य
— *डॉ. अनसूईया अग्रवाल* 78
9. धर्म का रहस्यमय स्वरूप और चंबा की लोक संस्कृति
— *डॉ. प्रिया शर्मा* 83
10. 'महनी' दंतकथा की मौलिक शैली
— *डॉ. ज्योति सिंह* 91

लोक की अवधारणा एवं लोक साहित्य का स्वरूप : एक विवेचन

डॉ. प्रीति सिंह

"लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीय और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।"[1]

'लोक' शब्द प्राचीन काल से ही विकासमूलक रहा है। लोक साधारण जन समाज है, जिसमें भू-भाग पर फैले हुए समस्त प्रकार के मानव सम्मिलित हैं। यह शब्द वर्ग-भेद रहित, व्यापक एवं प्राचीन परंपराओं की श्रेष्ठ राशि सहित, सभ्यता, संस्कृति के कारण कल्याणमय विकास का द्योतक है।

लोक साहित्य पर चर्चा करने से पूर्व 'लोक' शब्द की अवधारणा पर विचार करना अत्यंत आवश्यक जान पड़ता है। 'लोक' शब्द अत्यंत प्राचीन है तथा उसका प्रयोग भारतीय वाङ्गमय में प्राचीन काल से ही होता आया है। लोक शब्द संस्कृत की 'लोक-दर्शने' धातु में 'धञ्' प्रत्यय जोड़ने से निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है- 'देखना'। इस प्रकार इस कार्य को करने वाले संपूर्ण जन समुदाय को 'लोक' कहा जाता है। पाश्चात्य शब्दकोश में- "लोक को 'Folk' के समानार्थी शब्द के रूप में लिखा गया है। अंग्रेजी भाषी प्रयोग की दृष्टि से 'फोक' शब्द असंस्कृत और मूढ़ समाज अथवा जाति का द्योतक है, पर सर्वसाधारण जन एवं राष्ट्र के समस्त निवासियों के लिए भी इसका प्रयोग होता है।"[2]

लोक शब्द का अर्थ विस्तृत, व्यापक और सम्पूर्ण मानव जाति के अर्थ में, स्थान विशेष के रूप में लिया जाता है। प्राचीन साहित्य पुराणों, उपनिषदों, ऋग्वेद